SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. **SESSION** – 2020-22

SUBJECT - Learning and Teaching (C-3)

TOPIC NAME – Learner Centric Teaching (Part-II)

DATE - 30/06/2021

परिभाषा :-

जॉन डी० वी० के अनुसार :-

"बाल - केन्द्रित शिक्षा का समर्थन किया गया है। शिक्षा एक त्रिध्रुवीय प्रणाली है जिसके अंतर्गत शिक्षक, बालक एवं पाठ्यक्रम आते हैं।"

महात्मा गाँधी के शब्दों में :-

"शिक्षा उन सर्वश्रेष्ठ गुणों को विकसित करती है जो मानव के व बालक के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में विद्यमान होते हैं।"

बाल- केन्द्रित शिक्षण की विशेषतायें :-

बाल - केन्द्रित शिक्षा की मुख्य विशेषतायें निम्न प्रकार से हैं —

- बालक के संबंध में शिक्षक को उसके व्यवहार के मूल आधारों, आवश्यकताओं, मानसिक स्तर, रुचियों, योग्यताओं इत्यादि का विस्तृत ज्ञान होना चाहिए।
- बालक जो कुछ सीखता है उससे उसकी आवश्यकताओं का बड़ा ही घनिष्ठ संबंध होता है।

- स्कूल में पिछड़े हुए और समस्याग्रस्त बालकों में से अधिकतम ऐसे होते हैं जिनकी आवश्यकता स्कूल में पूरी नहीं होती हैं।

- इनके दोषों का मूल कारण उनकी शारीरिक, सामाजिक अथवा मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं में ही कहीं-न-कहीं है।

- बाल मनोवैज्ञानिक शिक्षक को बालकों के व्यक्तित्व भेदों से परिचित करता है।

उद्देश्य / सिद्धान्त :—

- बालकों को क्रियाशील रखकर शिक्षा प्रदान करना, जिससे कि किसी भी कार्य को करने में बालक के हाँथ पैर और मस्तिष्क सब क्रियाशील हो जाते हैं।

- इसके अंतर्गत बालकों को महापुरुषों, वैज्ञानिकों का उदाहरण देकर प्रेरित किया जाना शामिल है।

- अनुकरणीय व्यवहार नैतिक कहानियों व नाटकों आदि द्वारा बालक का शिक्षण किया जाता है।

- बालक के जीवन से जुड़े हुए ज्ञान का शिक्षण करना।

→ बालक की शिक्षा उद्देश्यपरक हो, अर्थात बालक को दी जानेवाली शिक्षा बालक के उद्देश्य की पूर्ति करने वाली हो।

→ बालक की योग्यता और रूचि के अनुसार विषय वस्तु का चयन करना।

→ रचनात्मक कार्य जैसे हस्तकला आदि के द्वारा शिक्षण

→ पाठ्यक्रम को छोटे-छोटे हिस्सों में बाँट कर शिक्षण।

बालकेन्द्रित शिक्षा का महत्व

बाल-केन्द्रित शिक्षा के महत्व से आशय उसकी उपयोगिता से है, जो निम्नवत् है—

1. बाल-केन्द्रित शिक्षा में बालक को शुरू से ही उसके परिवार और समाज के वातावरण के अनुसार शिक्षा मिलती है और उसी के अनुसार उसके व्यक्तित्व का निर्माण होता है। अतः व्यक्तिगत निर्माण का मूल आधार भी बाल-केन्द्रित शिक्षा ही है।

2. बाल केन्द्रित शिक्षा पूर्णत: परामर्शदाता के कर्तव्य की स्पष्ट भूमिका निभाती है। परामर्शदाता के कार्य उसकी योग्यता के अनुरूप होना चाहिए।

3. बाल-केन्द्रित शिक्षा अनुभव पर आधारित शिक्षा होती है। इसी कारण बालकों को पूर्ण विश्वास और दृष्टा के साथ निर्देशित किया जाता है। इसी के आधार पर बालकों का मानसिक विकास होता है और उनके सोचने समझने की शक्ति में वृद्धि होती है।

4. आधुनिक सभ्यता एवं संस्कृति में प्रत्येक घर को आदर्श नहीं बनाया जा सकता, परन्तु प्रत्येक विद्यालय को एक आदर्श बनाकर बालकों के विकास में सहयोग दिया जा सकता है। इस लिए भी बालकेन्द्रित शिक्षा का महत्व है।

5. तकनीकी शिक्षा जैसे विषयों पर विशेष ज्ञान जो परिवार में नहीं मिल सकता है वह विद्यालय में उपलब्ध होता है। इस दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है।